IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Comparative Study of welfare state and Antodaya: An evaluation of district kangra in the economic context.

1AMAN KUMAR, 2MANJEET SINGH

1MPHIL, 2MPHIL

1CUHP,

2CUHP

सार = यह अध्यनन का प्रेणता पंडित दीनदयाल जी को माना जाता है जिसका उद्देश्य यह था कि ऐसा मॉडल तैयार करना था जिसका केंद्र बिंदु मानव था। भारत देश की आजादी से पूर्व कई प्रकार की नीतियां बनाई जाती थी जिसका एकमात्र उद्देश्य लक्ष्य भारत को आजाद करवाना होता था। अथवा भारत देश किस प्रकार स्वतंत्र करवाया जाए। परंतु देश स्वतंत्र हो जाएगा उसके उपरांत देश को किस प्रकार संचालित किया जाएगा ? किस प्रकार देशवासियों का विकास होगा? किस प्रकार देश अग्रसर होगा ? बहुत से ऐसे पहलू से जिन पहलुओं पर किसी भी प्रकार का विचार-विमर्श नहीं किया गया और जिससे भारत देश में दिशाहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गई। चुकी भारत देश में अंग्रेजों का शासन था जिस कारण उसमें भारत देश के अंदर पश्चिमी सिद्धांतों की बहुलता थी फिर वह सिद्धांत साम्यवाद के हो अथवा पूजीवाद के हो ।पाश्चात्य सिद्धांतों के परे पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने समग्र विकास की अवधारणा सन् 1965 प्रस्तुत की जिसे एकात्म मानववाद तथा एकात्म मानव दर्शन की संज्ञा दी गई। और यह अधयन वर्तमान समय में एक भारतीय विद्याशास्त्र के अतर्गत होगे और इसका मूल उदेश्य

वर्तमान समय मे अत्योदय का प्रेणता पंडित दीनदयाल जी के विचारो का समाज पर क्या क्या प्रभाव है और किसी तरह से योगदान समाज को प्राप्त हो रहा है।

कीवर्ड- अत्योदय, मूल्यांकन ,आर्थिक ,एकात्म ,मानववाद, सामाजिक, राजनैतिक , आध्यात्मिक, विकास कल्याणकारी,

भूमिका = पंडित दीनदयाल जी के चिंतन को अंतोदय के नाम से संबोधित किया जाता है अंतोदय शब्द की बात करें तो यह ऐसे व्यक्तियों के विकास के लिए किया जाता है जो निर्धन है, वंचित है तथा आर्थिक रूप से पिछड़े हैं। पंडित दीनदयाल जी का माना था की ऐसी समाज में लागू की जाने वाली योजनाएं इस प्रकार से होनी चाहिए जिनको रोजगार की अधिकतम आवश्यकता है उन को रोजगार मिले, पिछड़े लोगों का अधिकतम हित हो तथा समग्र विकास हो । पंडित दीनदयाल जी कहते थे कि दरिद्रनारायण ही मेरा आराध्य है और जब तक नर नारायण की सेवा पूर्ण है , तब तक समाज में समृद्धि नहीं आ सकती । जब तक अंतिम पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति का विकास नहीं हो जाता तब तक भारत का संपूर्ण विकास संभव नहीं है । इस सम्यक दृष्टि को दीनदयाल जी ने अंतोदय (अतिम व्यक्ति का उदय) कहा। उनका कहना था कि आज मेरे देश में ऐसे करोड़ो लोग हैं , जो मानव के किसी भी अधिकार को अपयोग नहीं कर पाते, ऐसे लोगों को समाज साथ लेकर चलने के बजाय उन्हें मार का रोड़ा ही समझता है।

अंतोदय का सिद्धांत है कि समाज के मेले –कुचले, सीधे-सादे, दलित पिछड़े(जाति से नहीं, कर्म या अर्थ से) गरीब लोग हमारे श्री नारायण है, हमें उनकी पूजा करनी है (पूजा का अर्थ यहां उनके स्वर्गीय विकास के लिए किए गए प्रयासों के लिए किया गया है)। जिस हम इनको पक्के व सुंदर घर बना कर , जिस दिन हम उनके बच्चों ,महिलाओं एवं पुरुषों को शिक्षा और जीवन दर्शन का ज्ञान देंगे ,जिस दिन हम उनके हाथों पावों की विवाइयो (दरारों) को भरेंगे जिस दिन हम उनके उद्योग धंधों की शिक्षा देकर उनकी आय को ऊंचा उठा देंगे जिस दिन भारत एवं संपूर्ण विश्व का हर व्यक्ति भूखा नहीं सोएगा इलाज के अभाव में अपना दम नहीं तोड़ेगा उस दिन हमारे संपूर्ण

समाज के अंतोदय का स्वपन पूर्ण होगा अंतोदय के भाव के साथ एकात्म होना उसका पक्षधर बनना बनाना संपूर्ण समाज की प्राथमिकता होनी चाहिए।

कल्याणकारी राज्य = जिसका उद्देश्य सार्वजनिक कल्याण है, इसमें बे स्वयं को प्रभु ना समझते हुए अभी तो मानव जाति का सेबक समझता है राज्य का सबसे बड़ा उद्देश्य है – जनता का कल्याण | इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए राज्य देश का औद्योगिकरण करना चाहता है, कृषि में सुधार करना चाहता है, साथ ही वह चाहता है कि सर्वसाधारण का जीवन स्तर ऊंचा उठ सके अर्थात कल्याणकारी राज्य लोगों का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व आध्यात्मिक विकास करना चाहता है |कल्याणकारी राज्य एक ऐसा राज्य जो जनता का कल्याण चाहने वाला राज्य | इस प्रकार कल्याणकारी राज्य का मुख्य उद्देश्य आम जनता का सर्वांगीण विकास करना है |

कल्याणकारी राज्य सर्वसाधारण का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास चाहता है साथ ही गरीबी, बीमारी, भुखमरी, उपद्रव, अशांति से मुक्ति दिलाना भी कल्याणकारी राज्य का मुख्य उद्देश्य है ताकि आम जनता शांतिपूर्वक व सुख पूर्वक जीवन यापन कर सके | इस शासन में जो भी कार्य किए जाते हैं वे सभी कार्य जनता के कल्याण के लिए जाते हैं। कल्याणकारी राज्य में ऐसी योजनाएं लागू करना जिससे नागरिकों का उत्थान हो ।कल्याणकारी राज्य में कोई नागरिक गरीब नहीं होता | प्रत्येक नागरिक मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ होता है | नागरिकों में आर्थिक संसाधनों का संतुलित बंटवारा होता है | सभी नागरिकों के पास अपने कौशल को विकसित करके आर्थिक संसाधन जुटाने के अवसर होते हैं |कल्याणकारी राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है | बूढ़े, अपाहिज व असहाय लोगों को राज्य सुरक्षा प्रदान करता है | राज्य सभी के स्वास्थ्य की व्यवस्था करता है |कल्याणकारी राज्य कानून और व्यवस्था बनाए रखता है | लोगों के जीवन की सुरक्षा के लिए राज्य पुलिस आदि की व्यवस्था करता है तथा सभी लोगों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करता है |

कल्याणकारी राज्य में सभी लोगों को राजनीतिक जीवन में भाग लेने के पूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं |कल्याणकारी राज्य में भाषा, लिंग, जाति, वर्ण, क्षेत्र आदि के आधार पर नागरिकों में भेदभाव नहीं किया जाता | सभी के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है | कल्याणकारी राज्य उन सभी परंपराओं का विरोध करता है और उनके उन्मूलन के लिए कानून बनाता है जो समाज में भेदभाव को जन्म देती हैं |कल्याणकारी राज्य विश्व-शांति में विश्वास रखता है | अतः कल्याणकारी राज्य सभी पडोसी देशों के साथ मित्रता के प्रयास करता है | कल्याणकारी राज्य अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण ढंग से निपटारे में विश्वास करता है | दूसरे शब्दों में कल्याणकारी राज्य युद्ध का विरोध करता है और विश्व शांति स्थापित करना चाहता है |

साहित्य समीक्षा :डॉक्टर सरवन सिंह बघेल (2021), भारत की स्वर्गीय उन्नति का मंत्र अंतोदय, इस पुस्तक में लेखक द्वारा एकात्म मानव दर्शन और अंतोदय विचार के बारे था पंडित दीनदयाल उपाध्याय के बारे में कहा गया है। इस पुस्तक के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय द्वारा देखे गए अंतोदय के स्वप्न की सरल सुव्यवस्थित व्याख्या और अंतोदय के विषय में दिए गए सुझावों का विश्लेषण यहां किया गया हैं। इस पुस्तक में दिया गया है की पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को लेकर हम राष्ट्र का निर्माण तीव्र गति से कर सकते हैं।

हम भारत को शक्तिशाली समृद्धसंपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर सकते हैं जब हमारा एकमेव लक्ष्य अंतोदय के समर्थसाली सिद्धांत की वास्तविकता में स्वीकारने का हो। इस पुस्तक में लेखक के द्वारा यह सारी बातें कही गई है इसलिए यह पुस्तक मेरे अध्ययन हेतु अधिक उपयोगी होने वाली है ।**सं. अमरजीत सिंह (2017), मैं दीनदयाल बोल रहा हूं,** इस पुस्तक में लेखक द्वारा पंडित दीनदयाल जी के दुर्लभ छाया चित्रों के साथ विभिन्न विषयों पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दुर्लभ विचारों का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंतोदय विचार की भी बात कहीं गई है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा कहा गया है की ग्रामीण विकास से ही भारत का विकास संभव है। किस पुस्तक में लेखक ने कहा है की ग्रामीण योजनाओ तथा प्रगती का माप सीडी के ऊपर पहुंचे व्यक्ति से नहीं है बल्कि सबसे नीचे विद्यमान

व्यक्ति से है । अंतिम भाग में पंडित दीनदयाल जी की आकस्मिक मृत्यु तथा जनसंघ में उत्पन्न चुनौतियों का भी वर्णन किया गया है । इस पुस्तक में दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र राज्य चिति अनेक विचारों का वर्णन किया गया है यह पुस्तक मेरे शोध हेतु अति महत्वपूर्ण है।**सतीश धर(2007), अंतोदय पुरुष शांता कुमार ,** इस पुस्तक में राजनीति के चलते राष्ट्रीय स्तर पर शान्ता कुमार द्वारा प्रारंभ की गई लोक-हितकारी योजनाओं की बानगी भी देखने को मिलती है।

यह कृति सृजनात्मकता की छौन्क के साथ-साथ राजनीतिक इतिहास का भी दस्तावेज है । पुस्तक में लेखक द्वारा लिया गया साक्षात्कार शान्ता कुमार के व्यक्तित्व के कई कोने-अंतरों को खोलने में सक्षम रहा है। इस पुस्तक में अंतोदय योजना अंतोदय अन्न योजना यह किस प्रकार और कब शुरू हुई इसके बारे में भी इस पुस्तक में लेखक द्वारा लिखा गया है तथा इस योजना को शुरू होने से पूर्व क्या कठिनाइयां रही तथा इस योजना को शुरू करने का विचार किस प्रकार शांता जी के मन में आया सारी बातें इस पुस्तक में लिखी गई है ।

यह पुस्तक भी मेरे शोध कार्य हेतु अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है ।**भरत झुनझुनवाला (2000), भारतीय अर्थव्यवस्था समीक्षात्मक अध्ययन ,** इस पुस्तक में लेखक द्वारा मनुष्य को किस श्रेणी में किस प्रकार के साधनों की आवश्यकता रहती हैं या चिंता रहती है उसके बारे में बताया गया है इस पुस्तक में लेखक ने अव चेतन इच्छाओं की पूर्ति की बात की है इस पुस्तक में लेखक ने कहा है की अवचेतन इच्छाओं को देखना आसान नहीं है । इस पुस्तक में लेखक द्वारा कल्याणकारी राज्य के बारे में भी बताया गया है ।इस पुस्तक में कल्याणकारी राज्य की शुरुआत के वारे में भी बताया गया है की किस देश से हुई थी । अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है।

उसके बारे में भी बताया गया है। इस पुस्तक में बताया गया है यूरोपीय देश आज कल्याणकारी राज्य का बिखंडन करने में लगे हुए हैं । यह पुस्तक मेरे शोध कार्य हेतु अति आवश्यक है ।**डॉ बेबी सिंह (2019), भारत में निजीकरण और कल्याणकारी राज्य,** इस पुस्तक लेखक के द्वारा भारत में निजीकरण और कल्याणकारी राज्य के बारे में बताया गया है। लेखक ने इस पुस्तक के

माध्यम से बताया है कि भारत में निजी करण का उदय कब हुआ तथा कल्याणकारी राज्य का मतलब अथवा अर्थ और कल्याणकारी राज्य की परिभाषा को इस पुस्तक में पूरी तरह से बताया गया है । इसमें लेखक बताता है कि कल्याणकारी राज्य (welfare state) शासन की वह संकल्पना है जिसमें राज्य नागरिकों के आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पुस्तक मेरे शोध कार्य हेतु अति महत्वपूर्ण पुस्तक है या आवश्यक पुस्तक है ।**प्रभात झा (2018), अंतोदय समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प,** इस पुस्तक में लेखक द्वारा बताया गया है कि सामाजिक जीवन में और समाज के आर्थिक जीवन में यदि हमारी अर्थव्यवस्था अंत्योदय युक्त होगी तो समाज-जीवन की चिती की साधना स्वतः सफल होती जाएगी। अंत्योदय शब्द में संवेदना है, सहानुभूति है, प्रेरणा है, साधना है, प्रामाणिकता है, आत्मीयता है, कर्तव्यपरायणता है तथा साथ ही उद्देश्य की स्पष्टता है। इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि दीनदयाल उपाध्याय कहा करते थे कि 'जब तक अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का उदय नहीं होगा, भारत का उदय संभव नहीं है'। दीनदयालजी के अंत्योदय का आशय राष्ट्रश्रम से प्रेरित था। वे राष्ट्रश्रम को राष्ट्रधर्म मानते थे। अतः कोई श्रमिक वर्ग अलग नहीं है, हम सब श्रमिक हैं।

यह पुस्तक मेरे शोध कार्य हेतु अति महत्वपूर्ण और आवश्यक है।**शोध आवश्यकता;**वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों की बहुत प्रासंगिकता है, यह विचार हमारे राष्ट्र, हमारे देश, समाज के बहुत अनुकूल है जिस कारण से वर्तमान समय में इन विचारों का अध्ययन करना तथा अधिक गहनता से अध्ययन करना अति आवश्यक है ।**अध्ययन क्षेत्र:**इस शोध में मेरा अध्ययन क्षेत्र कल्याणकारी राज्य और अन्तोदय का तुलनात्मक अध्ययन हिमाचल प्रेदश के जिला कांगड़ा के पालमपुर जनपद का मूल्यांकन आर्थिक सन्दर्भ में है ।पर केंद्रित रहेगा ।**शोध उद्देश्य:** राज्य की कल्याणकारी आर्थिक प्रवृति का अध्ययन करना ।अन्तोदय विचार की आर्थिक प्रवृति अध्ययन करना । कल्याणकारी राज्य एवम अन्तोदय का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

वर्तमान में दोनों की प्रसंगिकता का अध्ययन करना **शोध विधि:**प्रस्तुत शोध पत्र पर ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है इसमें द्वितीय स्त्रोतों से सामग्री प्राप्त करके व्याख्या की गई है

। इसमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर आधारित पुस्तकों विचारों से संबंधित पुस्तको का ध्यान किया गया है ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय भारत राष्ट्र के निर्माता महान् विभूतियों में स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम एक अमर चिरस्मरणीय महापुरुष के रूप में लिया जाता है , उनकी दूरदृष्टि के अंत्योदय के माध्यम से ही समग्र राष्ट्र ही नहीं , समग्र विश्व का सम्यक एवं पूर्णांग विकास हो सकता है । ' अंत्योदय ' का अर्थ है " समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय " , जिसका · सरल भावार्थ है पिछड़े लोगों को उत्थान करना । गरीबों और पिछड़े वर्गों को दूसरे वर्गों के समान लाना । **- पिछड़ों के उत्थान के लिए विभिन्न प्रावधान** पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए तो भारत के संविधान में ही कई प्रावधान लागू किए गए हैं , अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के व्यक्तियों के लिए अनेक विशेष सुविधाएँ एवं रियायत प्रदान की गई है । आरक्षण व्यवस्था अनेकानेक क्षेत्रों में लागू है । आर्थिक लाभों से लेकर विभिन्न शिक्षा संस्थानों , प्रवेश परीक्षाओं , नौकरियों में उनके लिए निर्धारित अंकों की अर्हता सामान्य वर्गों से काफी रहती है।

पं . दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय एवं प्रचलित व्यवस्था में अन्तर

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय वर्तमान पिछड़े वर्गों के विकास के लिए चलाई जा रही आरक्षण व्यवस्था में आकाश पाताल का अन्तर है । इसलिए ही पिछड़ों का उत्थान सही रीति नहीं हो पा रहा है । गुणता तथा मेधा के क्षेत्र में अनुसूचित समुदाय के लोग सामान्य वर्गों से काफी पिछड़े हुए ही रहते हैं । बल्कि गुणवता के मामले में इन समुदायों को लोग दिनों दिन और भी ज्यादा पिछड़ रहे हैं । लगता है वर्तमान व्यवस्था रही तो वे युगों युगों तक पिछड़े ही नहीं बने रहेंगे , बल्कि कहीं और भी ज्यादा पिछड़ते जाएँगे । भले ही आर्थिक या अन्य सुविधाओं के मामले में वे सामान्य वर्ग के बराबर या उनसे अधिक उन्नत क्यों ने हो जाएँ । इसी बात को एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है—देश के एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री से किसी बच्चे ने एक

प्रश्न पूछा था – " अनुसूचित वर्गों के लिए आरक्षण व्यवस्था कब तक लागू रहेगी ? "उनका उतर था – जब तक वे दूसरे वर्गों के बराबर नहीं हो जाते ।

"इसके बाद बच्चे का प्रश्न था "मेडिकल की प्रवेश परीक्षा तक में यदि जिस बच्चे को सिर्फ 40 % अंक पाकर ही – सीट मिल जाए ,वह अव्वल आने के लिए प्रयास ही क्यों करेगा ? अनुसूचित वर्ग के माँ – बाप भी यही कहते हैं कि उनके बच्चे अच्छे अंक हासिल करने के लिए ज्यादा प्रयास ही नहीं करते । इसकार तो वे मेधा एवं गुणता की दृष्टि कभी भी सामान्य वर्ग के बराबर नहीं आ सकेंगे , बल्कि युगों तक पिछड़े ही बने रहेंगे । बल्कि और पिछड़ते जाएँगे । सुविधाभोगी बनकर हमेशा के लिए पिछड़े बने रहने का प्रयास करेंगे । अतः इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि " आरक्षण नीति " उन वर्गों को गुणता के मामले सदा - सदा के लिए पिछड़ा ही बनाए रखने के लिए बनाई गई है ? उन वर्गों के लोगों को राजनीतिक लाभ के लिए हमेशा के लिए कमजोर बनाए रखने के लिए है ? इस पर पूर्व प्रधानमंत्री जी निरुत्तर हो गए थे । पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय वर्तमान आरक्षण व्यवस्था के विपरीत सही मायने समाज के अंतिम पंक्ति के अर्थात गरीब से गरीब एवं पिछड़े से पिछड़े वर्गों को गुणवत्ता एवं मेधा के मामले में दूसरों के बराबर लाना था । यदि उनकी दृष्टि का अंत्योदय सही रीति लागू •

किया जाता तो आज देश फिर से " विश्वगुरु " का दर्जा पाता । हरेक नागरिक विश्व के अन्य देशों के लोगों की तुलना में अधिकाधिक गुणवान , विद्वान , वैज्ञानिक तथा अध्यात्मिक होता । उनका अंत्योदय का विचार व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति के विविध आयामों का परिचायक था । पिछड़े वर्गों को विभिन्न सुविधाएँ प्रदान करना तो आवश्यक था ही , लेकिन गुणता के मामले में तथाकथित ' रियायत ' प्रदान करके उन्हें मानसिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर व चिर - आलसी बनाकर और पतन के गर्त में धकेलना वे ' पाप ' ही मानते थे ।उनका विचार था कि सृष्टि के आरम्भ में सभी मानवजाति समान थीं । कालक्रम में जातिप्रथा की कुरीति के प्रचलन के बाद " छुआछूत " की जो गलत धारा चल पड़ी , उसने समग्र समाज को पंगु बना दिया । अगड़ों और

पिछड़ों के बीच बड़ी खाई पैदा हो गई। निचले वर्गों के लोगों पर उच्च वर्ग के लोगों द्वारा शोषण , अत्याचार होने लगे। जिससे समाज का पतन हुआ।

पं . दीनदयाल जी और जगन्नाथ संस्कृति जिस प्रकार पुरी के जगन्नाथ मंदिर में कोई छुआछूत की परंपरा नहीं है। शूद्र , चण्डाल का जूठा प्रसाद की पण्डे पुजारी श्रद्धा से खाते हैं। सभी भगवान के समान भक्त हैं। इसी प्रकार पं . दीनदयाल जी समस्त मानव जाति को एक ईश्वर की संतान मानकर बराबर मानते थे। किसी के बीच कोई अंतर या भेदभाव नहीं करते थे। पिछड़े वर्गों का हर तरह से उत्थान करना चाहते थे। वर्तमान व्यवस्था की तरह कोरी सुविधाएँ , कोरी रियायतें मात्र प्रदान कर उनकी बौद्धिक अधोगति नहीं करना चाहते थे। भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने के बाद से पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के विचारों , सिद्धान्तों एवं संकल्पों को साकार करने के लिए काफी कुछ प्रयास किए जा रहे हैं। कई संस्थानों के नाम उनके नाम पर रखा गया है ,

कई योजनाओं के नाम भी इन्हीं के नाम पर रखे गए , यथा- दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना। मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम , आगरा हवाई अड्डे का नामकरण भी उनके नाम से बदला गया है। सवाल उठना स्वाभाविक है कि कौन थे यह महान व्यक्ति ? पण्डित दीनदयाल उपाध्याय महान चिन्तक और संगठनकर्ता थे।

वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते देश को एकात्म मानववाद जैसी प्रगतिशील विचारधारा दी। उपाध्यायजी नितान्त सरल और सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके हिंदी और अंग्रेजी के लेख विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। केवल एक बैठक में ही उन्होंने चन्द्रगुप्त नाटक लिख डाला था। कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रतिभाशाली होता है उसने बचपन से प्रतिभा का अर्थ समझा होता है और उनके बचपन के कुछ किस्से ऐसे होते हैं जो उन्हें प्रतिभाशाली बना देते हैं। उनमें से एक हैं दीनदयाल उपाध्याय जिन्होंने अपने बचपन से ही जिन्दगी के महत्व को समझा और अपनी

जिन्दगी में समय बर्बाद करने की अपेक्षा समाज के लिए नेक कार्य करने में समय व्यतीत किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर , 1916 को ब्रज के मथुरा ज़िले के छोटे से गांव में हुआ था।

7 वर्ष की कोमल अवस्था में दीनदयाल माता – पिता के वंचित हो गये। माता – पिता की मृत्यु के बाद भी उन्होंने अपनी जिन्दगी से मुंह नहीं फेरा और हंसते हुए अपनी जिन्दगी में संघर्ष करते रहे। उन्होंने तमाम बातों की चिंता किए बिना अपनी पढ़ाई पूरी की। उपाध्याय जी ने पिलानी , आगरा तथा प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की। छात्र जीवन से ही वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। फिर प्रचारक बन गये। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपनी चाची के कहने पर धोती तथा कुर्ते में और अपने सिर पर टोपी लगाकर सरकार द्वारा संचालित प्रतियोगी परीक्षा दी। इसलिए लोग उन्हें ' पंडितजी ' कहकर पुकारने लगे , जो उनका उपनाम बन गया। जिसे लाखों लोग बाद के वर्षों में उनके लिए सम्मान और प्यार से इस्तेमाल किया करते थे। इस परीक्षा में वे चयनित उम्मीदवारों में सबसे ऊपर रहे।

वे सिविल सेवा परीक्षा में भी उतीर्ण हुए , फिर भी उसे त्याग दिया। विलक्षण बुद्धि , सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के स्वामी भारतीय राजनीतिक क्षितिज के इस प्रकाशमान सूर्य ने भारतवर्ष में समतामूलक राजनीतिक विचारधारा का प्रचार एवं प्रोत्साहन करते सिर्फ 52 साल की उम्र में अपने प्राण राष्ट्र को समर्पित कर दिए।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य भारत को विश्व – शक्ति नहीं , विश्वगुरु बनाने तथा देश खोई हुई सनातन संस्कृति को वापस है। राष्ट्रवादी , सामाजिक , राजनैतिक , युवा वर्गों के बीच में कार्य करने वाले , शिक्षा के क्षेत्र में सेवा के क्षेत्र में सुरक्षा के क्षेत्र में अन्य कई क्षेत्रों में संघ परिवार के संगठन सक्रिय रहते हैं। भाजपा इसकी विचारधारा का राजनैतिक दल है। दीनदयाल जी इसी के कार्यकर्ता रहे और अंततः अध्यक्ष बने।

भारतीय अर्थव्यवस्था अंत्योदय से

उनका विचार था " आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे हुए व्यक्ति नहीं , बल की सबसे नीचे के स्तर पर विद्यावान व्यक्ति से होगा । " इसी के अनुसार उनकी अंत्योदय की दृष्टि परिव्याप्त होती है हर हाथ को काम की संकल्पना के साथ । दीनदयालजी को जनसंघ के आर्थिक नीति का रचनाकार बताया जाता है ।

आर्थिक विकास ● का मुख्य उद्देश्य समान्य मानव का सुख है यह उनका विचार था । इसमें साम्यवाद , पूँजीवाद , अन्त्योदय , सर्वोदय आदि मुख्य हैं । उनके शब्दों में " भारत में रहनेवाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं । उनकी जीवन प्रणाली , कला , साहित्य , दर्शन सब भारतीय संस्कृति है । इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है । इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा । **" वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी सभ्यता से प्रचलित है** । इसी के अनुसार भारत में सभी धर्मों को समान अधिकार प्राप्त हैं ।" भारत जिन समस्याओं का सामना कर रहा है , उसका मूल कारण इसकी राष्ट्रीय पहचान ' की अपेक्षा है ।

" एकात्म मानववाद एक ऐसी धारणा है जो सर्पिलाकार मण्डलाकृति द्वारा स्पष्ट की जा सकती है जिसके केंद्र में व्यक्ति , व्यक्ति से जुड़ा हुआ एक घेरा परिवार , परिवार से जुड़ा हुआ एक घेरा समाज , जाति , फिर राष्ट्र , विश्व और फिर अनंत ब्रह्मांड को अपने में समाविष्ट किये है । इस अखण्डमण्डलाकार आकृति में एक घटक में से दूसरे फिर दूसरे से तीसरे का विकास होता जाता है । सभी एक – दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दूसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी है । इनमें कोई संघर्ष नहीं है । पं दीनदयाल उपाध्याय की परिकल्पना को साकार करने के लिए इस साल मई से 25 सितंबर तक सभी जिलों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं । आवास विभाग द्वारा उनके नाम से अंत्योदय आवास योजना शुरू की गई है । इसमें नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लिए 2 साल में एक करोड़ आवास बनवाए जाएंगे । इसी के साथ प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में पं दीन दयाल उपाध्याय शोध पीठ की स्थापना की जा रही है ।

उपाध्याय जी ने जो सिद्धांत दिया

अंत्योदय का वह आज देश में प्रचलित है। पर आखिर में यह अंत्योदय क्या है ? अंत्योदय मतलब आर्थिक रूप से कमज़ोर और पिछड़े वर्गों का उदय या विकास करने की क्रिया या भाव। अंत्योदय केवल उपाध्याय जी के द्वारा ही प्रतिष्ठित नहीं हुई परंतु वह एक भाग है बाकी अवधारणाओं का जैसे ' सर्वोदय ' यानी सबका विकास। दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है।

' मेक इन इंडिया ' , कार्यक्रम के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक तथा आर्थिक बेहतरी के लिए कौशल विकास आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के तहत शुरू किया गया था। भारत सरकार ने इस योजना के लिए 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस योजना का लक्ष्य शहरी गरीब परिवारों कि गरीबी और जोखि को कम करने के लिए उन्हें लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसर का उपयोग करने में सक्षम करना , जिसके परिणामस्वरूप मजबूत जमीनी स्तर के निर्माण से उनकी आजीविका में स्थायी आधार पर सराहनीय सुधार हो सके। इस योजना का लक्ष्य चरणबद्ध तरीके से शहरी बेघरों हेतु आवश्यक सेवाओं से लैस आश्रय प्रदान करने की परियोजनाएँ ।

अंत्योदय योजना की मुख्य विशेषताएं हैं :

- कौशल प्रशिक्षण और स्थापन के माध्यम से रोजगार मिशन के तहत शहरी गरीबों को प्रशिक्षित कर कुशल बनाने के लिए प्रति व्यक्ति 15 हजार रुपये का प्रावधान किया गया है , जो पूर्वोत्तर और जम्मू – कश्मीर के लिए प्रति व्यक्ति 18 हजार रुपये है। इसके अलावा , शहर आजीविका केंद्रों के जरिए शहरी नागरिकों द्वारा शहरी गरीबों को बाजारोन्मुख कौशल में प्रशिक्षित करने की बड़ी मांग को पूरा किया जाएगा।

- सामजिक एकजुटता और संस्था विकास इसे सदस्यों के प्रशिक्षण के लिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के गठन के माध्यम से किया जाएगा , जिसमें प्रत्येक समूह को 10,000 रुपये का प्रारंभिक समर्थन दिया जाता है । पंजीकृत क्षेत्रों के स्तर महासंघों को 50,000 रुपये की सहायता प्रदान की जाती है ।

- शहरी गरीबों को सब्सिडी सूक्ष्म उद्यमों (माइक्रो इंटरप्राइजेज) और समूह उद्यमों (ग्रुप इंटरप्राइजेज) की स्थापना के जरिए स्व – रोजगार को बढ़ावा दिया जाएगा । इसमें व्यक्तिगत परियोजनाओं के लिए 2 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी और समूह उद्यमों पर 10 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाएगी ।

- शहरी निराश्रय के लिए आश्रय शहरी बेघरों के लिए आश्रयों के निर्माण की लागत योजना के तहत पूरी तरह से वित्त पोषित है ।

- अन्य साधन बुनियादी ढांचे की स्थापना के माध्यम से विक्रेताओं के लिए विक्रेता बाजार का विकास और कौशल को बढ़ावा और कूड़ा उठाने वालों और विसक्षमों आदि के लिए विशेष परियोजनाएँ ।

इसी तरह राज्य सेक्टर में 166 पं दीन दयाल उपाध्याय मॉडल विद्यालयों का संचालन किया जाएगा । हर साल सभी जिलों के एक नगर पंचायत को मूलभूत सुविधाओं से लैस कर आदर्श नगर पंचायत बनाया जाएगा । पांच सालों में 375 आदर्श नगर पंचायतें बनाई जाएंगी । • लोक निर्माण विभाग 3,084 गांवों को संपर्क मार्गों से जोड़ेगा । “ हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है , केवल भारत ही नहीं । माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा बनकर रह जाएगा । “ इतना बड़ा नेता होने के बाद भी उन्हें जरा सा भी अहंकार नहीं था । 11

फरवरी , 1968 को मुगलसराय रेलवे यार्ड में वे मृत पाए गए , पर सच तो यह है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सदैव अमर हैं।

निष्कर्ष . यह अध्यनन वर्तमान समय मैं पं दीन दयाल उपाध्याय जी क विचारो का एक मॉडल को प्रस्तुत किया गया है जो की समाज मैं वह लोगो जो की आर्थिक रूप से कमज़ोर का उदय या विकास करने की क्रिया या भाव को प्रस्तुत करना था। यह अध्यनन हिमाचल प्रदेश के जिला कागड़ा के पालमपुर जनपद मैं किया और शोधकर्ता ने इसमें पाया गया की जो हिमाचल प्रदेश के जिला कागड़ा पालमपुर जनपद मैं शोधकर्ता ने अपने अध्यनन के अतर्गत पाया की जो वर्तमान समय मैं पंडित दीनदयाल जी के चिंतन को अंतोदय के नाम से संबोधित किया जाता है वह केवल कुछ बड़े लोगों की हाथों की कटपुतली बना कर ही रहा गया है जिसमें कुछ उच्च पद पर सीमत लोगों को ही इसका लाभ प्राप्त हो रहा है और शोधकर्ता ने अपने कार्य को पूरा करने के लिए पालमपुर मैं 100 परिवारो मैं अध्यनन किया और पाया की केवल इसमें पंडित दीनदयाल जी के चिंतन को अंतोदय का लाभ केवल 60% परिवारों को इसका लाभ हो रहा है और 40% के लाभ से समाज मैं लोगों अभी भी वचित है। और शोधकर्ता न अपने शोध को पूरा करने के हिमाचल प्रदेश के जिला कागड़ा के पालमपुर जनपद मैं पंडित दीनदयाल जी के चिंतन को अंतोदय ' का पयोग किया है जिसका अर्थ है " समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय " , जिसका · सरल भावार्थ है पिछड़े लोगों को उत्थान करना तो इसमें शोध कर्ता ने पाया की जब अपना अध्यनन आरभ किया तो समाज मैं अंतोदय के विचारो की कुछ लोगों तक ही जानकारी है परतु शोधकर्ता ने अपने अध्यनन को पूरा करने के लिए पंडित दीनदयाल जी के चिंतन को अंतोदय विचारों को समाज क साथ जोड़ा। उसके उपरात शोधकर्ता ने अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय लिए जागरूकता अभियान आरंभ किया है ताकि अंतोदय का लाभ समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुच सके ।शोधकर्ता ने अंत में अपने शोध के अध्यनन मैं पाया हिमाचल

प्रदेश के जिला कागड़ा के पालमपुर जनपद में पाया किया पंडित दीनदयाल जी के विचारो से काफी सीमा तक समाज में विकास हो रहा है।

ग्रंथ सूची :

बघेल डॉ. सरवन सिंह ,भारत की स्वर्गीण् उन्नति का मंत्र अंतोदय , प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली,2021.

सिंह अमरजीत, मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूं, प्रतिभा प्रतिष्ठान ,नई दिल्ली, 2017.

धर सतीश, अंतोदय पुरुष शांता कुमार, आर्य प्रकाशन मंडल, गांधी नगर दिल्ली,2007.

झुनझुनवाला भरत , भारतीय अर्थव्यवस्था समीक्षात्मक , राजपाल एंड संज कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2000.

सिंह डॉ. बेबी, भारत में निजीकरण और कल्याणकारी राज्य, भारती प्रकाशन , 2019.

झा सं. प्रभात , अंतोदय समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का संकल्प, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली,2018.